कर्मयोगी केशवानन्द

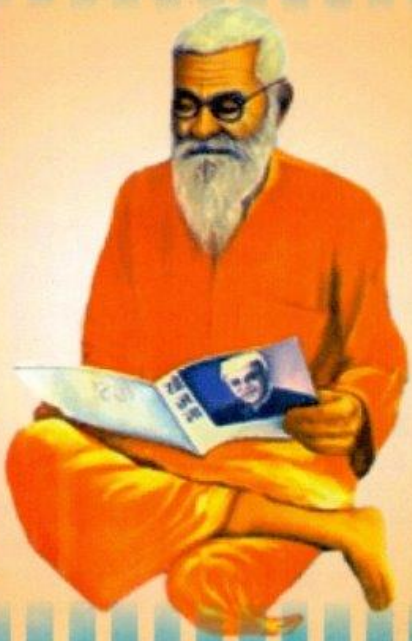

-श्रीराम शर्मा आचार्य

साधु-संन्यासियों के लिए आदर्श—कर्मयोगी केशवानंद

भारतवर्ष की अनेक विशेषताओं में से एक विशेषता यहाँ के साधु-संन्यासी भी हैं। इसमें संदेह नहीं कि यह परंपरा अति प्राचीन काल से चली आई है, पर विभिन्न युगों में इसका इतना अधिक रूपांतर हुआ है कि आज के साधु-संन्यासियों को देखकर प्राचीन काल के साधुओं का किसी भी प्रकार अनुमान नहीं लगाया जा सकता। हमको भारतीय-साहित्य में वशिष्ठ, विश्वामित्र, व्यास, गौतम, कपिल, कणाद आदि ऋषियों का जो विवरण मिलता है, उससे यह कभी प्रकट नहीं होता कि वे आजकल के 'साधुओं' की तरह बिना कोई समाजोपयोगी कार्य किये दूसरों के परिश्रम की कमाई से पेट भरने वाले जीव थे। उनमें से शायद ही कोई गृहत्यागी था। वे सच्चे अर्थों में समाज और धर्म के संचालक थे और यदि दान ग्रहण भी करते थे, तो उसका उपयोग अधिकांश में विद्या-प्रचार, समाजोन्नति की विविध प्रकार की प्रवृत्तियों में ही करते थे। यदि आजकल के अस्सी-नब्बे लाख 'साधु' नामधारी व्यक्ति उस परंपरा का कुछ अंशों में भी पालन करते तो आज भारतीय समाज और हिंदू-जाति की दशा वर्तमान से बहुत भिन्न और संतोषजनक हो सकती थी। पर इस समय हम 'साधुओं' की जो गतिविधियाँ देख रहे हैं, उसका परिणाम विपरीत ही देखने में आ रहा है, उससे समाज की किसी प्रकार की सेवा या उन्नति होने के बजाय, उसके पतन में ही सहायता मिलती दिखाई पड़ रही है।

ऐसी दशा में जब हम साधुओं की वेशभूषा में रहने वाले और नाम के आगे भारतीय संन्यासियों का परिचायक 'स्वामी' शब्द लगाये हुए श्री केशवानंद जी के जीवन पर दृष्टि डालते हैं, तो सहसा एक आश्चर्य का-सा भाव मन में उदय होता है। साधु-संन्यासियों को हमारे समाज में जो सम्मान मिलता है, उनके प्रति जो श्रद्धा और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भक्ति की भावना प्रकट की जाती है, उसका मुख्य आधार यही धारणा हो सकती है कि—"साधु एक सच्चा परोपकारी जीवन व्यतीत करने वाला समाज का उपकारकर्ता होता है।" गृह-जीवन को त्यागकर साधु का बाना ग्रहण करने का अगर कोई अर्थ हो सकता है तो यही कि गृहस्थी के भार और झंझटों से मुक्त होकर वह व्यक्ति अपनी समस्त शक्तियों को पूर्णतः धर्म के अभिवर्धन, लोकोपकार और जनसेवा में लगायेगा। आज लाखों साधु-संन्यासियों की जाँच करने पर दस भी इस आदर्श पर चलने वाले नहीं मिलते। स्वामी केशवानंद जी ने साधुओं की बदनाम प्रचलित-परंपरा को छोड़कर एक सच्चे जन-सेवक, महान् कर्मयोगी का जो आदर्श उपस्थित किया है, उस पर यदि सौ में से एक भी भगवा वस्त्रधारी चलने लग जाये तो देश और समाज का कल्याण होते देर न लगे।

आरंभिक जीवन और साधुवृत्ति का अवलंबन—

स्वामी केशवानंद जी (जन्म सन् १८८३) की दूसरी बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि सर्वथा निरक्षरता के वातावरण में उत्पन्न होने और किसी भी प्रकार के साधन न होने पर भी उन्होंने अपने को शिक्षित और सुसंस्कृत बनाया और स्वयं अल्प शिक्षित होने पर भी अन्य हजारों-लाखों व्यक्तियों को शिक्षित बनाने के लिए एक नहीं, दस-बीस शिक्षा संस्थाओं और पुस्तकालयों का निर्माण कर दिया। जैसा हमको उनके स्वलिखित एक संस्मरण से विदित होता है, उनके माता-पिता शेखावटी (राजस्थान) के मगलूण नामक बहुत छोटे-से गाँव में रहते थे। वे जाति के जाट थे और ऊँट द्वारा सवारी या माल ढोने का धंधा करते थे। जब ये दो-ढाई वर्ष के थे, तभी इनके पिता का देहांत हो गया।

एक तो पहले ही इनका घर बिल्कुल निर्धन था, फिर जब अकेली माता रह गई तो उसे रोटियों का मिलना भी कठिन हो गया। इससे इनको पाँच-छह वर्ष की आयु से ही गाय और बछड़े-बछिया चराने का काम करना पड़ा। पंद्रह-सोलह वर्ष तक की आयु इसी तरह व्यतीत हुई। उसके पश्चात् कुछ पढ़े-लिखे लोगों को देखकर और धार्मिक विषयों में रुचि उत्पन्न हो जाने से इनके मन में संस्कृत पढ़ने की अभिलाषा पैदा हुई। बस वे अपने गाँव से निकल पड़े और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पैदल चलकर ही फजिल्का आ पहुँचे। लोगों से पूछते-पूछते संत कुशलदास जी के साधु आश्रम में चले गए। वहाँ उस स्थान पर ठहरे हुए साधुओं ने इनकी कथा सुनकर सम्मति दी कि—"यदि तुम संस्कृत पढ़ना चाहते हो तो साधु हो जाओ, क्योंकि इसके बिना भोजन-वस्त्र की सुविधा नहीं हो सकती।"

यद्यपि केशवानंद जी की इच्छा आरंभ से साधु होने की नहीं थी, पर विद्याध्ययन का और कोई साधन न मिल सकने पर उन्होंने यह स्वीकार कर लिया और महंत कुशलदास जी के चेले बन गये। कई महीने आश्रम में रहे, पर जब फजिल्का में कोई ठीक ढंग से पढ़ाने वाला न मिला तो ये घूमते-फिरते १९०५ के कुंभ में इलाहाबाद जा पहुँचे। वहाँ अनेक साधुओं से परिचय हुआ। इनके गुरु भी फजिल्का से आ गये। सबकी सलाह से इनको हरिद्वार की एक संस्कृत पाठशाला में भेजा गया। हरिद्वार में कुछ महीने रहकर अमृतसर आ गये और वहाँ 'लघुकौमुदी' पढ़कर संस्कृत का साधारण ज्ञान प्राप्त कर लिया। सन् १९०८ में गुरु जी का देहांत हो गया और इनको ही साधु-आश्रम का संचालक बनाया गया। दो वर्ष तक वहाँ ठहरकर आश्रम की व्यवस्था ठीक की और एक पुस्तकालय की स्थापना की। कुछ समय बाद वहीं एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित कर दी।

पर केशवानंद जी को अन्य संत-महंतों की तरह आश्रम में बैठे रहकर भक्तों से पूजा कराना और आराम से खाते-पीते रहना पसंद नहीं था। वे समझते थे कि यह मानव तन कर्म करने के लिए ही मिला है और जब 'साध' का बाना धारण कर लिया तो उसकी सार्थकता परमार्थ के मार्ग पर चलने में ही है। इसलिए वे तीर्थ भ्रमण के रूप में देश की दशा का निरीक्षण करके स्वानुभव प्राप्त करने लगे और साथ ही यह भी देखने लगे कि हमारे सेवा करने योग्य क्षेत्र कौन हो सकता है ? इस प्रकार भ्रमण में पाँच-सात वर्ष व्यतीत करके वे फजिल्का के निकटवर्ती अबोहर कस्बे में प्रचार-कार्य करने लगे और सन् १९२० में कुछ उत्साही युवकों के सहायोग से 'नागरी प्रचारिणी सभा' के नाम से एक छोटा-सा पुस्तकालय स्थापित कर दिया। पर दो-तीन वर्ष बाद जब स्वामी जी असहयोग आंदोलन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाग लेने के कारण जेल चले गये, तो पीछे से संस्था की व्यवस्था बिगड़ गई। जब लोगों ने पुस्तकों को नष्ट होते देखा तो सब पुस्तकें तथा अन्य सामान इनके फजिल्का वाले 'साधु आश्रम' के पुस्तकालय में भेज दिया।

जेल से लौटने पर स्वामी जी ने यह दशा देखी तो उनको दुःख तो अवश्य हुआ, पर उसकी चिंता न करके फिर दूसरा पुस्तकालय निर्माण करने में लग गये। इस बार उन्होंने पहले पुस्तकालय का निजी मकान बनाने का निश्चय किया, जिससे उसका कार्य स्थायी रूप से चल सके। उन्होंने इस जमीन और भवन आदि की रजिस्ट्री 'हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' के नाम से करा दी और इस संस्था को वहीं की एक शाखा बना दिया। पुस्तकालय की इमारत सन् १९२६ तक बनकर कार्य आरंभ हो गया और अगले दो वर्षों में इसकी पर्याप्त वृद्धि भी हो गई, पर उसे पूरा करने में कुछ कर्ज हो गया, जिसके लिए बार-बार तकाजा किया जाने लगा। वह देखकर स्वामी जी धन संग्रह को निकल पड़े और प्रतिज्ञा की कि, मैं तभी लौटूँगा जब यह कर्ज चुकाने लायक चंदा प्राप्त हो जाए।

उनके उद्योग से यह उद्देश्य शीघ्र ही पूरा हो गया और 'अबोहर साहित्य-सदन' अपना कार्य क्षेत्र दिन पर दिन बढ़ाने लगा। स्वामी जी ने गंगानगर, एलनाबाद, मुक्तसर, बहावलनगर आदि स्थानों में उसकी शाखाएँ खुलवा दी। साहित्य सदन की बगल में एक व्यायामशाला भी स्थापित की, जिसमें सदस्यगण शारीरिक उन्नति भी कर सकें। एक छोटा-सा संग्रहालय स्थापित कर दिया, जिसमें प्राचीन हस्त-लिखित ग्रंथ, सिक्के, चित्र और कारीगरी की वस्तुएँ रखी गई 'दीपक' नाम का एक मासिक-पत्र प्रकाशित किया जाने लगा और उसके लिए प्रेस भी खोल दिया गया। एक चलता-फिरता पुस्तकालय खोला गया, जिसका उद्देश्य आस-पास के सैकड़ों गाँवों में समय-समय पर पुस्तकें पहुँचाते रहना था। इससे जहाँ एक ओर ग्रामीण जनता की बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक विषयों पर जानकारी बढ़ी, वहाँ उनमें पठन-पाठन की रुचि भी उत्पन्न हो गई और कुछ समय पश्चात् अनेक स्थानों के निवासी स्वयं ज्ञान-प्रचार के विभिन्न आयोजन करने लग गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार स्वामी जी ने पंजाब के एक प्रदेश में राष्ट्र-भाषा हिंदी के प्रचार का एक ऐसा स्थायी केंद्र स्थापित कर दिया, यहाँ से विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियाँ समय-समय पर आरंभ करके जनता में हिंदी-भाषा और भारतीय संस्कृति का प्रचार किया जाने लगा। इसके पहले उस प्रांत में और खासकर हरियाणा प्रदेश में हिंदुओं की प्रधानता होते हुए भी उर्दू का प्रचार ही अधिक था। लोगों को देवनागरी लिपि सिखाने के लिए 'साहित्य-सदन' की तरफ से ५५ हजार 'हिंदी वर्णमाला' चार्ट बाँटे गये और 'गुरुमुखी-हिंदी शिक्षक' तथा 'उर्दू-हिंदी शिक्षक' नाम की प्राइमरी पुस्तकें तैयार करके बिना मूल्य प्रचारित की गईं, जिससे लोग हिंदी पढ़ना-लिखना सीख सकें। साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं का एक बड़ा केंद्र भी वहाँ खोल दिया गया, जिससे साहित्यिक ज्ञान बढ़ाने का अवसर प्राप्त हो गया। इस प्रकार 'साहित्य-सदन' ने दस-पाँच वर्ष के भीतर ही अबोहर और उसके आस-पास सौ-पचास मील के क्षेत्र को साहित्य तथा संस्कृति की दृष्टि से पर्याप्त प्रगतिशील बना दिया। इन्हीं दिनों जब हरियाणा के प्रमुख राजनीतिक नेता पं० नेकीराम शर्मा ने इस संस्था का निरीक्षण किया तो उन्होंने यहाँ की 'सम्मति पुस्तक' में जो विचार प्रकट किया, उनमें एक जगह लिखा था—

"अबोहर का यह 'साहित्य-सदन' है तो पुस्तकालय, पर इसका ठाट दर्शनीय है। यह सब तरह से सुंदर है, स्थान खुला हुआ है, स्वास्थ्य के लिए इसे 'आरोग्य भवन' कहा जा सकता है। जिस प्रदेश में हिंदी-भाषा और देवनागरी अक्षरों का प्रवेश कठिन था, वहाँ आज 'साहित्य-सदन' के प्रताप से हिंदी साहित्य का एक विशेष स्थान बन गया है। यह हिंदीभाषियों के लिए हर्ष व उत्साहवर्द्धक उदाहरण है। स्वामी केशवानंद जी के देश-प्रेम और राष्ट्रभाषा अनुराग का गीत यह 'सदन' ऊँचे स्वर से गा रहा है।"

सन् १९५४ में यहाँ पर अखिल भारतवर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रयाग विश्व-विद्यालय के श्री अमरनाथ झा उसके अध्यक्ष थे और डॉक्टर भीखनलाल आत्रेय एम० ए०, डी० लिट० (हिंदू-विश्व विद्यालय) तथा डॉक्टर रामनारायण डी० एस० सी० (कृषि कॉलेज, लायलपुर) आदि विद्वान्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्य परिषदों के सभापति थे। अबोहर छोटा-सा स्थान होने पर भी स्वामी केशवानंद जी के परिश्रम और अन्य सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से सहयोग प्राप्त कर सकने की प्रवृत्ति के फलस्वरूप यह अधिवेशन बहुत सफलतापूर्वक हो गया और दो-ढाई हजार आगंतुकों के ठहरने तथा भोजन आदि की जैसी सुव्यवस्था यहाँ की गई वैसी व्यवस्था अनेक बड़े-बड़े नगरों में भी संभव नहीं हो सकती थी।

इस सफलता के पश्चात् साहित्य-सदन देश भर में विख्यात हो गया और देश के गणमान्य नेता, वहाँ समय-समय पर पहुँचते रहे। सरदार वल्लभ भाई पटेल भी एक अवसर पर वहाँ गए और 'सदन' की कार्यवाही से संतुष्ट होकर उन्होंने लिखा—

"यह एक रमणीक स्थान है,जिसे देखकर चित्त बहुत प्रसन्न होता है। कोई भी एक व्यक्ति किसी संस्था के पीछे अपना चित्त लगाकर प्रयास करते हुए कितना काम कर सकता है ? यह इस संस्था को देखने से मालूम होता है। सदन का लाभ आस-पास के लोग ठीक पा रहे हैं।"

इसके अतिरिक्त पंजाब के कांग्रेस नेता डॉ० गोपीचंद भार्गव, बाबा राघव दास, कृष्णकांत मालवीय, धुरेंद्र शास्त्री, श्री हरिभाऊ उपाध्याय जैसे अनेक देश प्रसिद्ध व्यक्ति समय-समय पर इसका निरीक्षण करते रहे, जिससे इसकी कार्यशीलता और उपयोगिता दिन पर दिन बढ़ती गई। 'हिंदुस्तान' के संपादक श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने यहाँ आकर जो कुछ देखा और उससे प्रभावित होकर, उन्होंने अपने जो विचार एक लेख के रूप में प्रकट किये, उससे इस संस्था के वास्तविक महत्त्व पर अच्छा प्रकाश पड़ता है—

"साहित्य-सदन का मुझे परिचय था। वहाँ एक बड़ा पुस्तकालय है, यह भी मैं जानता था, वहाँ के कार्यकर्ताओं के त्याग, तपस्या और लगन की कहानी भी मैंने कुछ सुन रखी थी। लेकिन उनके विशाल और व्यापक रूप का परिचय मुझे वहाँ जाने पर ही मिला। जितनी विशाल उसकी इमारत है और जितना सुंदर उसके भीतर का दृश्य है, ठीक उतना ही विशाल और सुंदर उसका वह स्वरूप है, जो आँखों से नहीं दीख पड़ता, पर वहाँ जाने पर सहज ही समझ में आ जाता है। 'साहित्य-सदन' एक पुस्तकालय या संग्रहालय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही नहीं है, वह एक जीती-जागती प्रगतिशील संस्था है, जिससे न केवल अबोहर शहर में, बल्कि आस-पास के पचासों गाँवों और शहरों के चारों ओर के इलाके, यहाँ तक कि साथ लगी हुई बीकानेर, पटियाला, बहावलपुर की रियासतों तक में जीवन, जाग्रति और प्रगति का प्रवाह निरंतर बहता रहता है। पंजाब हिंदी के लिए मरुभूमि कहा जाता है। इस मरुभूमि में यह 'सदन' सचमुच एक सोता और तीर्थ-स्थान है।"

"गुरुकुल-कांगड़ी के उस वातावरण में, जिसे तीन लोक से न्यारा कहा जा सकता है, मुझे चौदह वर्ष बिताने का सौभाग्य मिला है। पूज्य महात्मा गांधी के 'सत्याग्रह आश्रम' में भी कुछ दिन रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। सात्त्विकता, उदारता, स्वच्छता, पवित्रता और आत्मीयता की दृष्टि से 'सदन' का वातावरण इन संस्थाओं से कम नहीं है। इसके संस्थापक श्री केशवानंद जी में त्याग, तपस्या, बलिदान, कष्ट-सहन, लगन, धुन और परिश्रम आदि के सभी गुण न मालूम कहाँ से और कैसे आकर इकट्ठे हो गये हैं ? सादगी, सरलता, मिलनसारिता और नम्रता आदि उनके स्वभाव में दूध-पानी की तरह एक हो गये हैं। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव समस्त संस्था पर वैसे ही व्यापा या समाया हुआ है, जैसा स्वामी श्रद्धानंद जी का 'गुरुकुल' में और गांधी जी का 'सत्याग्रह आश्रम' में तथा गुरुदेव का 'शांतिनिकेतन' में था।"

"नौकर नाम का कोई प्राणी, सिवा एक माली के सदन में नहीं है और माली भी नौकर न होकर सदन वालों का एक साथी ही बन गया है। जहाँ नौकर न हो, वहाँ मेहतर का होना तो कोई अर्थ ही नहीं रखता। इतने पर भी सदन में सफाई कमाल की रहती है। संस्था का सारा कार्य जिसमें कमरों की झाड़ू देना, चारों ओर सफाई रखना और अतिथियों की सेवा करना भी शामिल है, कार्यकर्ता स्वयं करते हैं। इस प्रकार सदन का वातावरण एक आश्रम का-सा बन गया है और कार्यकर्ताओं के पारस्परिक व्यवहार से वे सब एक परिवार के सदस्य जान पड़ते हैं।"

इस प्रकार संगठन और ऐसा आत्मीयता का वातावरण वहीं संभव है, जहाँ मुख्य कार्यकर्ता स्वयं निःस्वार्थ और सच्चे सेवाभावी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हों। इन्हीं दोनों गुणों के बल पर स्वामी जी उस मरुभूमि में 'साहित्य सदन' जैसी एक हरी-भरी भूमि (नखलिस्तान) निर्मित कर सके। स्वयं के लिए त्याग और कठोर परिश्रम का अभ्यास तो उनको बाल्यावस्था में ही हो गया था, जबकि उनको भूख-प्यास, ठंड-गर्मी सहन करके दिन भर कोसों तक गाय चराने जाना पड़ता था। स्वामी जी लिखते हैं कि-"गर्मी की ऋतु में उस मरुभूमि में गाय चराते समय जब प्यास के कारण प्राण निकलने लगते थे, तो हम संतोष और आत्म नियंत्रण द्वारा ही उस पर विजय पाते थे। वहाँ कुछ अछूत जाति के बालकों के पास पानी होता भी था, पर गाँव वालों की कट्टरतापूर्ण जाति प्रथा के कारण हमें उस लालच को भी संवरण करना पड़ता था।"

ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया—

सेवा-धर्म की महिमा अपरंपार है। यह एक इतना महान् कर्तव्य है, जिनके पालन करने का अवसर देवताओं को भी कम ही मिल पाता है। सेवा-धर्म के नाम पर किये जाने वाले सभी कार्य एक स्तर के नहीं होते। कुछ व्यक्ति शहरों में ही, जहाँ आवागमन, खान-पान निवास-स्थान, प्रकाश, सुरक्षा आदि सब बातों की सुविधा होती है, सेवा-कार्य कर सकते हैं। पर सेवा की अधिक आवश्यकता और महत्त्व उन स्थानों में होता है, जहाँ सुख-सुविधाओं का अभाव होता है, जहाँ के निवासी थोड़ी-सी भी सहायता को, आश्रय को बड़ी कृतज्ञता के साथ शिरोधार्य करते हैं। ईसाई मिशनरियों ने ऐसे घोर जंगलों, अगम्य घाटियों और दुनिया की नजरों से छिपे हुए टापुओं में पहुँचकर और अपनी जान को खतरे में डालकर सेवा कार्य किये हैं, जिससे कि उनकी कीर्ति अमर हो गई और साथ ही ईसाई-धर्म की जड़ भी मजबूत हो गई।

स्वामी केशवानंद जी की संगरिया में स्थापित 'ग्रामोत्थान विद्यापीठ' एक ऐसा ही सेवाकार्य है। यह एक बहुत ही बीहड़ और सब प्रकार की सुख-सुविधाओं से वंचित स्थान था। यह राजस्थानी रेगिस्तान के एक किनारे पर बसा हुआ था और बड़ी-बड़ी आधुनिक सुविधाएँ तो दरकिनार, वहाँ पीने का पानी भी नहीं मिलता था। वहाँ के निवासी तीन मील की दूरी से ऊँट या कंधे पर पीने का पानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाते थे। जब पानी की यह दशा थी तो वहाँ हरियाली, बाग-बगीचा, फल-फूल की संभावना ही कहाँ से होती ? यहाँ पर गर्मियों में आँधियाँ अक्सर आया करती थीं और इतनी धूल उड़ा करती थी कि दिन में ही रात हो जाती थी। इस कारण यहाँ हरियाली कम ही दिखाई देती थी और अकाल की-सी अवस्था बनी रहती थी।

इस प्रकार की प्राकृतिक और आर्थिक परिस्थितियों में शिक्षा, ज्ञान-चर्चा, स्कूल, पुस्तकालय की क्या आशा की जा सकती थी ? सन् १६१६ तक संगरिया के आस-पास के सैकड़ों वर्गमील के क्षेत्र में एक भी स्कूल न था। सन् १६१७ में यहाँ के कुछ नवयुवकों के हृदय में, जो अखबारों में देश-विदेश की प्रगति के समाचार पढ़ा करते थे और कभी-कभी आर्य-समाज के जलसे में उपदेशकों के प्रेरणाप्रद विचार सुन लेते थे, अपने यहाँ की गिरी हुई दशा पर बड़ा खेद हुआ और परस्पर सम्मति करके, यहाँ एक स्कूल की स्थापना करने का विचार किया।

पर इन लोगों के पास साधनों का अभाव था और वहाँ की परिस्थितियों को देखते हुए यह स्पष्ट जान पड़ता था कि जब तक स्कूल का निजी मकान न होगा, उसके स्थायी होने की कोई आशा नहीं की जा सकती थी। इस पर कुछ उत्साही व्यक्तियों, जिनमें से चौधरी बहादुर सिंह ने इस काम के लिए जीवन ही अर्पित कर दिया, इस कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाया। एक स्थानीय सज्जन ने चौदह बीघा जमीन स्कूल के लिए दान कर दी और अन्य लोगों ने बड़ी दौड़-धूप करके पाँच-सात कमरों के बनाने लायक चंदा इकट्ठा करके कार्यारंभ कर दिया। सन् १६१८ में स्कूल का निजी मकान तैयार हो गया और कुछ पढ़ाने वाले भी तैयार हो गए। पर जब कार्य अग्रसर हुआ तो अन्य प्रकार की कठिनाइयाँ सामने आने लगीं। उनका जिक्र करते हुए इस स्कूल की आरंभिक रिपोर्ट में कुछ ऐसी बातें बतलाई गई हैं, जिनसे हमारे देश की अत्यंत पिछड़ी हुई सामाजिक परिस्थिति और प्रगति के मार्ग में रोड़ा अटकाने वाले एक 'विशेष श्रेणी' के व्यक्तियों की हेय मनोवृत्ति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"यह बता देने की आवश्यकता है कि इसका प्रारंभिक नाम "जाट ऐंग्लो संस्कृत मिडिल स्कूल" था। चूँकि इस इलाके में जाटों की ही आबादी अधिक है, इसलिए संस्थापकों ने लोगों की मनोवृत्ति समझकर इसके नाम के साथ 'जाट' शब्द जोड़ना ही उचित समझा। पर इससे यह नहीं समझना चाहिए कि यह संस्था जाति-पाँति के संकीर्ण दायरे में आबद्ध थी। इसमें आरंभ ही से समस्त जातियों के, यहाँ तक कि हरिजनों के बालकों को भी समानता के भाव से शिक्षा देने की व्यवस्था थी। हरिजनों के कारण कुछ समय तक उच्च कही जाने वाली जातियों ने इस स्कूल का विरोध भी किया। वे इसे ढेड़ियों (चमारों) का स्कूल कहने लगे। इसके संचालकों को अधार्मिक कहा गया। यह समय ही ऐसा था जब लोगों को संध्या-हवन आदि करना भी अच्छा नहीं लगता था। जब स्थानीय सेठों को यह मालूम होता कि उनके लड़कों को गायत्री आदि वेद-मंत्र सिखाये जाते हैं, तो वे उनको स्कूल से उठा लेते थे। बात यहीं तक सीमित नहीं रही। लोगों ने इसकी शिकायत रियासत के अधिकारियों से भी की और इस प्रकार एक सरकारी मिडिल स्कूल संगरिया में खोल दिया गया। विरोधी लोग प्रचार करने लगे कि सरकारी स्कूल में पढ़े लड़कों को राज्य की नौकरी मिलने की सुविधाएँ दी जायेंगी और उनको छात्रवृत्तियाँ भी मिल सकेंगी। पर इस संस्था के संचालक धैर्यपूर्वक अपना सेवा-कार्य करते रहे, जिससे अन्य स्थानों में भी उन्होंने अपने स्कूल की १२ शाखाएँ स्थापित कर दीं, जिनमें सन् १९२५ में १२० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।"

इस प्रकार निःस्वार्थ कर्ताओं के सेवा-भाव के आधार पर यह संस्था क्रमशः उन्नति करती गई। एक बार तो धन के अभाव से संस्था का कार्य स्थगित होते देखकर चौ० बहादुर सिंह ने आमरण अनशन आरंभ कर दिया। इस पर स्कूल के वार्षिकोत्सव पर अनेक स्थानीय नेताओं द्वारा धन-संग्रह की चेष्टा की गई। इसमें कई हजार रुपया इकट्ठा हो गया और स्कूल की अधूरी इमारतों का कार्य पूरा होकर संस्था का कार्य ठीक ढंग से चलने लग गया। पर इसके कुछ समय पश्चात् इस सच्चे सेवक का देहांत हो गया, तो फिर इसके ऊपर काली घटाएँ घिरने लगीं। फिर भी शेष कार्यकर्ता कुछ नये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सज्जनों की सहायता से इसके कार्य को चलाते रहे और आगामी सात वर्षों में उन्होंने इसके कार्यक्षेत्र को कुछ और आगे बढ़ाया। उन्होंने प्रयत्न करके इसके लिए सरकारी सहायता भी प्राप्त की जिससे इसमें भी कुछ छात्रवृत्तियाँ दी जाने लगीं।

स्वामी केशवानंद जी का आगमन—

पर फिर भी जब संस्था के सामने नई समस्याएँ उत्पन्न हो रही थीं, जिनकी पूर्ति कर सकना वर्तमान कार्यकर्ताओं को संभव नहीं जान पड़ता था। स्कूल के मकान और छात्रवास आदि साधारण श्रेणी की सामग्री से बनाये गये और इन चौदह वर्षों में उनकी दशा बहुत कुछ मरम्मत-तलब हो गई थी। इस काम को पूरा करने के लिए कई हजार की आवश्यकता थी। कार्यकर्ताओं ने इस पर विचार किया और जान पड़ा कि जब तक कोई जीवनदानी व्यक्ति इस भार को न उठायेगा तब तक इसकी सुचारु व्यवस्था नहीं हो सकती। उनका ध्यान स्वामी केशवानंद जी की तरफ गया, जिन्होंने अबोहर के 'साहित्य-सदन' की उस प्रदेश में धूम मचा दी थी। इस पर स्वामी जी से प्रार्थना की गई कि वे संगरिया की इस शिक्षा-संस्था की व्यवस्था का भार ग्रहण करने की कृपा करें।

स्वामी जी ने संगरिया आकर देखा कि स्कूल की सभी इमारतें अब जीर्ण हो चुकी हैं और उनके जीर्णोद्धार की बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने 'काया पलट' शीर्षक एक पर्चा प्रकाशित किया और इस कार्य के लिए बीस हजार रुपये की अपील की गई। स्वामी जी तन-मन से इस योजना की सफलता में जुट गये और कुछ ही समय में बीस हजार के बजाय साठ हजार की लागत से पुराने इमारतों का जीर्णोद्धार होने के साथ ही कितने ही इमारतें भी बन गईं और संस्था का कार्य दिन पर दिन प्रगति करने लग गया। स्वामी जी के उदाहरण से अन्य कार्यकर्ताओं में भी उत्साह की वृद्धि हुई और वे अपना अधिकाधिक समय इस काम में देने लगे। इसके परिणामस्वरूप कुछ और मकान बनाकर मिडिल स्कूल को हाईस्कूल बना दिया गया और एक नया छात्रावास भी बना दिया गया। जिससे विद्यार्थियों की संख्या में बहुत वृद्धि हो गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी जी का कला प्रेम और संग्रहालय—

स्वामी केशवानंद जी किसी एक कार्य की पूर्ति करके वहीं रुक जाना नहीं जानते थे। निरंतर सेवा-कार्य करते रहना उनका जीवन-व्रत था अथवा यों कहना चाहिए कि प्रतिदिन बिना कठिन श्रम किये उनसे रहा नहीं जा सकता था। इसलिए वे संस्था की वृद्धि के लिए निरंतर उद्योग करते रहते थे और इससे उसमें नई-नई प्रवृत्तियों का जन्म होता रहता था। सन् १९३८ में उन्होंने स्कूल के साथ एक संग्रहालय स्थापित कर दिया, जो धीरे-धीरे बढ़कर एक महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थान बन गया है। आरंभ में तो इसमें संस्था के ही एक चित्रकला के अभ्यासी शिक्षक के बनाए चित्र और कुछ इधर-उधर से माँगकर प्राप्त की गई वस्तुएँ ही रखी गई थीं, पर जब स्वामी जी ने उस प्रदेश के ग्रामीण लोगों को उससे लाभ उठाते देखा, तो वे उसकी उन्नति की तरफ अधिक ध्यान देने लगे और जगह-जगह से दर्शनीय वस्तुएँ लाकर उसकी श्रीवृद्धि करने लगे। वे स्वयं भी एक कला प्रेमी थे और इस बात को जानते थे कि मनुष्य की सोई हुई श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के जगाने में कला का एक प्रभाव पड़ता है। स्वामी जी इस संग्रहालय को किस प्रकार सजाया और सँवारा है ? इसका कुछ परिचय श्री कुमारिल स्वामी नामक कलाकार के स्वानुभव से मिलता है। वे लिखते हैं—

"सन् १९५६ की बात है। दिल्ली के 'कांस्टीट्यूशन क्लब' में कोई जल्सा था और वहाँ के रंगमंच पर मेरे बनाये चार-पाँच चित्र टँगे हुए थे। इनमें से एक था, 'कर्ण और परशुराम'। जब अधिवेशन समाप्त हुआ तो गेरुआ वस्त्र पहिने एक साधारण, सरल किंतु तेजस्वी संन्यासी रंगमंच पर आये और गहरी दृष्टि से उन चित्रों को देखने लगे। 'कर्ण और परशुराम' चित्र के सामने आकर तो वे एकदम खड़े हो गये। उनकी चित्रकला के प्रति निष्ठा ने मुझे क्षण भर के लिए तो अभिभूत किया, पर दूसरे ही क्षण मैंने उपेक्षापूर्वक अपने मन में कहा—संन्यासी और चित्रकला से प्रेम, यह हो नहीं सकता और मैं उसी समय बाहर चला गया।"

"थोड़ी देर बाद जब मैं दुबारा भीतर आया तो देखा कि वही संन्यासी श्री मन्मथनाथ गुप्त के साथ खड़े किसी को ढूँढ़ रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन्मथनाथ मुझे देखते ही कहने लगे—"अरे कुमारिल सुनो ! स्वामी जी तुमसे मिलने के इच्छुक थे। तुम्हारे चित्र इनको बहुत पसंद आये हैं।" मैंने ऊपरी शिष्टाचार से स्वामी जी से कुछ बातें कीं। लेकिन स्वामी मुझसे इस प्रकार मिले मानों मैं बहुत बड़ा आदमी हूँ और वे कोई बिल्कुल छोटे व्यक्ति हैं। उनकी नम्रता देखकर मैं बहुत लज्जित हुआ और मन में कहा—यह निश्चय ही कोई उदार पुरुष हैं। कुछ बातें करके स्वामी जी ने 'कर्ण और परशुराम' चित्र के खरीदने की इच्छा प्रकट की। मैं उसे बेचना नहीं चाहता था, पर उन्होंने जब बहुत आग्रह किया तो उसकी कीमत ५०० रु० बतला दी। स्वामी जी ने मेरा पता नोट कर लिया, तो भी मैंने अपने मन में यही कहा—यह संन्यासी मेरे चित्र को खरीदने के लिए ५०० रुपये खर्च नहीं कर सकेंगे और इसलिए मैं इस सौदे की तरफ से उदासीन हो गया।"

'पर तीन दिन बाद अपने ठहरने के स्थान 'हरिजन निवास' पर पहुँचने पर पता चला कि एक संन्यासी मुझे पूछते-पूछते आये थे और काफी प्रतीक्षा के बाद चले गये। इसी प्रकार चौथी बार आने पर मेरी उनके साथ भेंट हुई और उन्होंने ५०० रु० देकर उक्त चित्र खरीद लिया। उस अवसर पर स्वामी जी से मेरी विस्तृत बातचीत हुई कि वे कहाँ रहते हैं और चित्र उन्होंने क्यों खरीदा है, आदि ? उन्होंने मुझसे संगरिया आने का भी आग्रह किया। कुछ समय पश्चात् एक दिन मैंने बहिन सत्यवती मल्लिक से स्वामी जी के विषय में पूछा तो उन्होंने बताया—"कुमारिल जी ! यह सौभाग्य है कि एक देवता से आपका परिचय अनायास हो गया। जीवन में ऐसे व्यक्ति कम मिलते हैं। स्वामी जी सच्चे अर्थों में निस्पृह साधु हैं। आप उनकी संस्था देखने अवश्य जाइए, जब वह बुला गये हैं तो।'

'मेरा मन स्वामी जी के आश्रम को देखने को उतावला हो उठा और एक दिन अपने आने की सूचना देकर मैं संगरिया के लिए चल ही पड़ा। अभी संगरिया से दो स्टेशन आगे गाड़ी मंडी डबवाली स्टेशन पर खड़ी थी कि मैंने देखा कि स्वामी जी गाड़ी की तरफ आ रहे हैं। अपने प्रति स्वामी जी का यह स्नेह देखकर मैं सिकुड़ गया और आवाज देकर उनको बुलाया। स्वामी जी बहुत प्रसन्न हुए और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोले—'कुमारिल जी ! मेरे पास तो थर्ड क्लास का टिकट है।' मैं अपर क्लास में था, इससे लज्जित हो उठा। आश्रम में पहुँचकर हम उनके कमरे में गये और बड़ी प्रसन्नता से वे मुझे अपने संग्रहीत चित्र दिखाने लगे—

"मैंने देखा कि स्वामी जी उस क्षेत्र में सचमुच देवता की तरह माने जाते हैं। गाँव के लोगों का विश्वास है कि स्वामी जी सिद्ध व्यक्ति हैं और उन्हें ईश्वर का साक्षात्कार हो गया है। इन लोगों ने स्वामी जी के संबंध में कई ऐसी बातें मेरे सामने कहीं, जिन पर विश्वास करना मेरे लिए संभव न था। पर मैंने इतना जान लिया कि चाहे स्वामी जी ने आकाश के ऊपर रहने वाले भगवान् का साक्षात्कार भले ही न किया हो, लेकिन उन्होंने जनता-जनार्दन का साक्षात्कार अवश्य किया है। सर्वसाधारण के उत्थान के लिए उन्होंने अपने खून की एक-एक बूँद अर्पित की है। जनता की सेवा ही उनका एकमात्र लक्ष्य है और इस दृष्टि से वे आदर्श संन्यासी हैं।"

स्वामी जी जनता की सेवा में किस प्रकार व्यस्त रहते हैं ? इसका वर्णन भी उपर्युक्त लेखक ने एक स्थान पर किया है—"संगरिया और गंगानगर के इलाके में अब पानी की एक नहर जारी कर दी गई है। इस नहर ने वहाँ के जन-जीवन को बदल दिया है। दूसरी बार जब मैं वहाँ गया, तो इस नहर में पानी आना बंद हो गया था और इससे समस्त जनता परेशान हो उठी थी। स्वामी जी यह देखकर बड़े दुःखी हुए और जीप लेकर चंडीगढ़ दौड़े गये। तीन-चार चक्कर लगाने पर दूसरे दिन पानी को लेकर ही वापस लौटे। मैं आश्रम के बाहर खड़ा स्वामी जी को देख रहा था। वे नंगे बदन कड़ी धूप में खड़े कुंडों को पानी से भरवा रहे थे और उनके हाथ में फावड़ा था। मुझे उस समय वे साक्षात् 'आधुनिक भागीरथ' ही लग रहे थे। स्वामी जी भारतीय संसद के सदस्य हैं, बहुत बड़े शिक्षा-प्रचारक हैं, कितनी ही संस्थाओं के संचालक हैं, आदि बातों का परिचय मैं अनेक व्यक्तियों से सुन चुका था। पर आज उनको फावड़ा हाथ में लिए देखकर जो परिचय मिला, उससे मालूम हुआ कि वे उन विशेषताओं से भी बहुत ऊपर हैं। वे वास्तव में मनुष्यता, त्याग और तपस्या के आदर्श थे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"स्वामी जी ने जनता तथा विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवृद्धि के साधन रूप इस 'संग्रहालय' में किस प्रकार पदार्थ परिश्रमपूर्वक इकट्ठे किये हैं, इसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

(१) पुरातत्व विभाग—इसमें ईसा की चौथी शताब्दी तक की मूर्तियाँ, सिक्के और वर्तमान समय के देश-विदेशों के सिक्के, करेंसी नोट, डाक-टिकट आदि हैं।

(२) ऐतिहासिक कला विभाग—इसमें भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों तथा अन्य देशों के बने ताँबा, पीतल, काँसा, चाँदी आदि के बर्तन तथा मूर्तियाँ हैं। बादशाही जमाने के ताँबे पर ठप्पे के सुनहरी काम के नमूने हैं, जिनमें बादशाहों और बेगमों के चित्र बने हैं। भारत, चीन और कश्मीर के चित्रित कलापूर्ण मिट्टी के बर्तन, गुलदस्ते तथा अन्य सजावट की वस्तुएँ भी काफी संख्या में हैं।

(३) काष्ठकला विभाग—कश्मीर, पंजाब, उड़ीसा, तिब्बत, चीन आदि की लकड़ी की सुंदर काम की हुई वस्तुएँ इसमें संग्रहीत हैं।

(४) शस्त्रागार—बादशाही जमाने की ढाल, तलवारें—पंजाब, पटियाला, राजस्थान के विभिन्न हथियार व जिरह-बख्तर आदि रखे गये हैं।

(५) वस्त्र और आभूषण—पंजाब और राजस्थान की तरह-तरह की बंधेज की साड़ियाँ, फुलकारियाँ, पुराने जमाने के वस्त्र और कसीदा के बढ़िया नमूने इस विभाग में देखे जा सकते हैं।

(६) हाथी दाँत और हड्डी का काम—भारत व चीन का हाथी दाँत पर किया गया सुंदर काम व तिब्बत के बने हड्डी के आभूषण इसमें रखे गए हैं। तिब्बत में मनुष्य की हड्डी को अस्पर्श्य अथवा गंदा नहीं मानते और उसके कलापूर्ण आभूषण बनाकर धारण किये जाते हैं।

(७) जंगली जानवर—मृत जंगली जानवरों की खालों से बनाये गये उनके नमूने।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(८) **चित्रशाला**—इसमें मुगल, राजपूत व अन्य शैलियों की बहुत-सी प्राचीन और नवीन कलाकृतियाँ संग्रहीत हैं। हाथी दाँत पर बनाये चित्र और कला की अन्य वस्तुएँ भी प्रदर्शित हैं।

इस संग्रहालय से विद्यार्थियों और दर्शनार्थ आने वाली जनता की बहुत ज्ञान-वृद्धि होती है और वे संसार के दूर-दूर के देशों की संस्कृति और विशेषताओं की अनेक बातें यहीं पर जान लेते हैं। स्वामी जी को भी इस विभाग से बड़ा प्रेम है और जब वहाँ होते हैं, तब दिन में दो बार उनका निरीक्षण अवश्य कर आते हैं। इस संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुओं की संख्या इस समय ४-५ हजार के बीच में है और उनको संग्रह करने में डेढ़ लाख के लगभग रुपया (आज की कीमत में अनुमानतः लगभग पचास लाख रु०) खर्च किया गया है। वर्ष के लगभग पचास हजार व्यक्ति इसको देखने के लिए आते हैं। दर्शकों को नियत्रित रखने के लिए अब इसमें एक आना (आज के हिसाब में दो रु०) टिकट प्रणाली जारी कर दी गई है।"

पुस्तकालय और वाचनालय—

स्वामी जी की दृष्टि में पुस्तकालयों का बड़ा महत्त्व है और उनका सार्वजनिक जीवन फजिल्का और अबोहर पुस्तकालयों से ही आरंभ हुआ है। वे समझते हैं कि जब तक भारतीय जनता में अध्ययन और ज्ञान-प्राप्ति की रुचि जाग्रत् न होगी, तब तक देशोन्नति का कार्य कठिन ही है। इसलिए संगरिया विद्यापीठ का चार्ज लेने के दो वर्ष पश्चात् ही यहाँ पुस्तकालय के लिए 'सरस्वती मंदिर' नाम की एक इमारत अलग ही बनवाई और उसमें 'आर्य-भाषा पुस्तकालय' की स्थापना की। इसमें अब समस्त भाषाओं की तीस हजार से ऊपर पुस्तकें हैं। राजस्थान में किसी निजी संस्था का पुस्तकालय इससे अधिक बड़ा नहीं है। छपी हुई पुस्तकों के अतिरिक्त संस्कृत, हिंदी, अरबी, फारसी आदि के बहुसंख्यक प्राचीन हस्त-लिखित ग्रंथ भी इसमें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय के साथ एक बहुत बड़ा वाचनालय भी है, जिसमें पचास से अधिक सामायिक पत्र आते रहते हैं। यह आज से लगभग सत्तर वर्ष पहले की बातें हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महिला श्रम तथा स्त्री शिक्षा का प्रचार—

जैसा बताया जा चुका है—सन् १६१७ तक संगरिया के आस-पास ८०० वर्ग मील के क्षेत्र में एक भी स्कूल नहीं था और इसी कमी को दूर करने के लिए यह शिक्षा-संस्था एक छोटे-से मिडिल स्कूल के रूप में आरंभ की गई थी। जब स्वामी जी ने इसका कार्यभार संभाला और लड़कों की शिक्षा के लिए यहाँ एक बड़ा हाईस्कूल बना दिया तथा आस-पास बहुत-से छोटे स्कूल भी खुलवाए, तो उनके सामने लड़कियों की शिक्षा का प्रश्न भी आया। वे जानते थे कि समाज की उन्नति केवल लड़कों के शिक्षित हो जाने से ही संभव नहीं है। स्त्रियाँ समाज का आधा भाग हैं और भावी संतान को सुयोग्य बनाना उनके ही ऊपर निर्भर है। इस विचार से स्वामी जी ने इस तरफ भी ध्यान दिया और लोगों में बालिका-शिक्षा की रुचि उत्पन्न करके संगरिया के समीप चौटाला गाँव में एक लड़कियों का स्कूल स्थापित कर दिया। इसके पश्चात् विद्यापीठ में ही एक 'महिला आश्रम' खोला गया, जिससे पृथक् हाई स्कूल छात्रावास, अध्यापिका निवास पुस्तकालय, वाचनालय आदि विभाग लगभग ८ बीघा जमीन में फैले हुए हैं।

यह संस्था मुख्य रूप से प्रौढ़ महिलाओं को साक्षर बनाकर सुयोग्य गृहिणी और सामाजिक कार्यकर्तृ बनाने के लिए खोली गई थी, पर इसमें बालिकाएँ भी बराबर शिक्षा प्राप्त करती रहीं। अब इसमें लगभग कई हजार लड़कियाँ शिक्षा पा रही हैं और लगभग आधी छात्राएँ छात्रावास में रहती हैं। महिला आश्रम में पढ़ने-लिखने की शिक्षा के अतिरिक्त कसीदा, पाकशास्त्र, शिशुपालन आदि की भी शिक्षा दी जाती है। इनमें लड़कियों के खेल-कूद और व्यायाम आदि की भी व्यवस्था है। जब देश की एक प्रसिद्ध महिला दर्शक ने इस संस्था की छोटी-छोटी लड़कियों को भाले की नोकों को माथे से लगाकर बड़ी-बड़ी चीजों को हटाते और भारी-भारी पत्थरों को बालों में बाँधकर उठाते देखा, तो वे आश्चर्यचकित रह गईं।

विद्यापीठ की स्त्री-शिक्षा प्रचार की प्रवृत्तियाँ दूर-दूर तक फैली हुई हैं। जब उन्होंने देखा कि पास ही गंगा नगर में भी लड़कियों के छात्रावास की काफी माँग है, तो उन्होंने वहाँ एक पुराने लड़कों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छात्रावास को ही लड़कियों के छात्रावास के रूप में बदलने का विचार किया। पर गंगानगर के जिलाधीश स्वामी जी की योजना और उनके कार्यों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उनको एक नई जमीन दे दी और वहाँ पर अब छात्रावास ही नहीं, लड़कियों का एक इंटर कॉलेज बनवाने की भी व्यवस्था कर दी। अब यह संस्था स्त्री-शिक्षा का प्रचार बहुत बड़े रूप में कर रही है।

कुछ समय पश्चात् स्त्री-शिक्षा के प्रदेशव्यापी प्रचार के लिए किसी पृथक् संस्था के निर्माण की योजना सोची गई और इसके लिए 'महाजन' नामक गाँव को पसंद किया गया, क्योंकि वहाँ रेलवे का बड़ा स्टेशन है और दिन में कई बार गाड़ियाँ आती-जाती हैं, जिससे विद्यार्थियों को आने-जाने में काफी सुविधा हो सकती है। इस योजना को लेकर स्वामी जी जब महाजन के जागीरदार राजा रघुवीरसिंह जी के पास पहुँचे, तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक संस्था के लिए ५०० बीघा जमीन और १००१) रुपया नकद देने की स्वीकृति दे दी। सन् १९५१ में तो इस भूमि में शामियाना लगाकर दो महीने के लिए प्रौढ़-शिक्षा शिविर खोला गया, जिसमें तीस नर नारी साक्षर बनाये गये। सन् १९५३ से इमारतों और जलाशय का निर्माण कार्य आरंभ हुआ और अगले वर्ष दिल्ली विधानसभा की अध्यक्षा श्रीमती डॉक्टर सुशीला नैयर से इसका उद्घाटन करा दिया गया। इस संस्था का नाम 'कस्तूरबा ग्रामोत्थान विद्यापीठ' रखा गया। इसमें पढ़ने वाली समस्त छात्राओं को भोजन, वस्त्र, पुस्तकें आदि सब संस्था की तरफ से ही दिया जाता है। अब इस संस्था में एक बड़ी संख्या में महिलाएँ और लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करके समाज में उत्थान संबंधी कार्यों में भाग लेने को तैयार हो रही हैं। इसकी प्रगति से संतुष्ट होकर राजा रघुवीर सिंह जी ने इसे १५०० बीघा जमीन और कई दुकानें और प्रदान कर दी हैं।

आयुर्वेद और धात्री (नर्स) शिक्षा—

शिक्षा के साथ स्वास्थ्य-रक्षा का भी घनिष्ठ संबंध है। बहुत-से शिक्षित व्यक्ति शारीरिक निर्बलता और अस्वस्थ रहने के कारण ही जीवन में यथोचित सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। स्वामी जी स्वयं भी जो इतना अधिक सेवा-कार्य कर सके, उसका एक बड़ा आधार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका सुदृढ़ स्वास्थ्य ही रहा है। इसी से वे अल्प साधनों से समस्त भारत का भ्रमण कर सके और तत्पश्चात् निरंतर दौड़-धूप करके इतनी संस्थाओं की स्थापना तथा सुव्यवस्था में समर्थ हो सके। इसलिए उन्होंने इस संस्था की 'कायापलट' का कार्यक्रम बनाते समय उसमें व्यायाम और चिकित्सा को भी प्रमुख स्थान दिया।

व्यायाम के लिए संस्था के एक विद्यार्थी श्री केवलराम शर्मा को बड़ौदा की सुप्रसिद्ध 'जुम्मा दादा व्यायामशाला' में प्रशिक्षण प्राप्त करने को भेजा गया। जब वह वहाँ से पूरी ट्रेनिंग प्राप्त करके वापस आ गया तो खेल-कूदों की साधारण सामग्री के सिवाय लाठी, गदका, तलवार, भाला, डंबल, लेजम आदि के समस्त उपकरण भी एकत्रित कर दिए गए। इससे छात्रों में व्यायाम की रुचि स्वयमेव बढ़ गई और सभी विद्यार्थी कोई न कोई व्यायाम करने लगे। इसके लिए एक बड़ी इमारत भी बनवा दी गई, जिसमें सब सामग्री सुरक्षित और सुव्यवस्थित रहे और हर एक ऋतु में व्यायाम नियमित रूप से होता रहे।

चिकित्सा के लिए एक आयुर्वेदिक विद्यालय स्थापित किया गया। स्वामी जी की एक योजना यह भी थी कि छोटे गाँवों में जो स्कूल खोले जाएँ, उनमें ऐसे शिक्षक नियुक्त हों, जो शिक्षा के साथ चिकित्सा का कार्य भी कर सकें। इससे उनकी उपयोगिता बढ़ जाएगी, ग्रामीणों पर उनका प्रभाव भी अधिक पड़ेगा और उनका कार्यक्षेत्र भी बढ़ जाएगा, जिससे फालतू समय का सदुपयोग हो सकेगा। विद्यापीठ में आयुर्वेद की केवल किताबी शिक्षा ही नहीं दी जाती है, वरन् एक औषधालय भी खोला दिया गया है, जिसमें सब प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियाँ जैसे चूर्ण, आसव,भस्में आदि भी बनाई जाती हैं। इस औषधालय द्वारा विद्यार्थियों को औषधि निर्माण और चिकित्सा का व्यावहारिक अभ्यास भी हो जाता है। महिलाओं की चिकित्सा के लिए स्त्री-चिकित्सिका भी रखी गई हैं।

आयुर्वेद का ही एक अंग धात्री-शिक्षा भी है। पर खेद है कि इस तरफ हमारे सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षा संस्थाओं ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया है। इसे एक छोटा और गंदा काम समझकर नीची जाति की स्त्रियों के लिए छोड़ दिया गया है, जो अपने अज्ञान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के कारण इसको बड़े असंतोषजनक ढंग से करती हैं। इस देश की अशिक्षित दाइयों के कारण यहाँ की स्त्रियों को प्रसवावस्था में कितना कष्ट उठाना पड़ता है और उनमें से कितनी भयंकर यौन-रोगों की शिकार हो जाती हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। इसलिए सवामी जी ने विचार किया कि लड़कों से भी बढ़कर लड़कियों को चिकित्सा की शिक्षा देने की आवश्यकता है। उनको विशेष रूप से शिशु-चिकित्सा, गर्भिणी चिकित्सा और प्रसूति-विज्ञान का ज्ञान कराया जाना परमावश्यक है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है, उसमें छात्राओं को सबसे पहले शरीर की रचना और उसके अंगों का साधारण ज्ञान कराया जायेगा, क्योंकि इसके बिना केवल दवाओं के नुस्खे जान लेना या बनी हुई औषधियाँ लाकर रख लेने से काम नहीं चल सकता। आजकल हमारे देश के अनेक वैद्य नामधारियों में इस बात की कमी है कि वे शरीर के भीतरी अंगों का कुछ भी ज्ञान नहीं रखते और केवल दवाओं के गुणों के आधार पर ही चिकित्सा किया करते हैं। ऐसे व्यक्तियों द्वारा दी गई औषधियाँ संयोगवश कभी लाभ पहुँचा देती हैं और कभी हानिकर सिद्ध हो जाती हैं। अगर वे रोगी की भीतरी व्यवस्था की जाँच करके इलाज करें, तो उनको बहुत अधिक सफलता मिल सकती है। शरीर विज्ञान में हृदय के कार्य और रक्त-संचार, फेफड़ों की बनावट और प्राण वायु के कार्य, पाचन-संस्थान और आमाशय, मलाशय आदि के कार्य, मलनिष्कासक अंग जैसे गुर्दा, मूत्राशय, त्वचा आदि का कार्य, प्रजनन अंग और उनके कार्य आदि की जानकारी होने से उचित औषधि देने में विशेष सुविधा रहती है।

दूसरा विषय रोगी परिचर्या का रखा गया है, क्योंकि औषधि उचित होने पर भी यदि रोगी के पथ्य, स्वच्छता, उठाने-बैठाने, सर्दी-गर्मी का पूरा ध्यान न रखा जाए तो उसे लाभ होने के बजाय हानि पहुँच सकती है।

इन बातों के साथ ही जड़ी-बूटियों की साधारण पहिचान और उनके द्वारा अधिक काम में आने वाली सामान्य औषधियाँ स्वयं तैयार कर लेना भी एक चिकित्सक के लिए आवश्यक है। डॉक्टरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

औषधियाँ आजकल अधिकांश में तैयार मिलने लगी हैं और एलोपैथिक डॉक्टर विभिन्न दवाओं के मिश्रण स्वयं बनाने के बजाय बाजार में तैयार मिलने वाली पेटेंट औषधियों से ही ज्यादा काम लेने लगे हैं। पर यह तरीका ज्यादा खर्च का है, जो इस देश की बहुसंख्यक गरीब जनता के अनुकूल नहीं। इसलिए यदि अपने निवास स्थान के आस-पास बिना मूल्य मिलने वाली जड़ी-बूटियों और बाजार में बिकने वाली साधारण मूल्य की दवाओं से काम लिया जा सके, तो वह इस देश की आर्थिक स्थिति और प्राकृतिक वातावरण के अधिक अनुकूल सिद्ध होगा।

दूसरे वर्ष में धात्री-विद्या की विशेष शिक्षा दी जायेगी, जिसमें गर्भ-धारण करने का सामान्य ज्ञान, गर्भावस्था में उत्पन्न होने वाले रोगों और कठिनाइयों का प्रतिकार, शिशु-जन्म के समय काम आने वाले आधुनिक उपकरणों और यंत्रों का परिचय और उपयोग, प्रसव के पश्चात् होने वाला रक्तस्राव और उसकी चिकित्सा, समय से पहले उत्पन्न होने वाले बच्चों की देखभाल आदि का समावेश होगा।

धात्री शिक्षा में गर्भिणी की परिचर्या का भी बड़ा महत्त्व है। हमारे यहाँ इस विषय में बड़ा अज्ञान देखने में आता है। बच्चा पैदा होते समय स्त्रियों को प्रायः जैसी प्रकाश और वायुविहीन कोठरियों में रखा जाता है, उसमें न मालूम कितने बच्चे और नवजात शिशु अकाल में ही कालकवलित हो जाते हैं, इसलिए प्रत्येक महिला-चिकित्सक को गर्भ के समय के उपद्रवों और प्रसव के पश्चात् की निर्बलता और विभिन्न रोगों की चिकित्सा का ज्ञान होना आवश्यक है।

शिल्प और उद्योग शिक्षा—

स्वामी केशवानंद जी जन्म से ही स्वावलंबी रहे हैं और इसी गुण के भरोसे वे आधुनिक शिक्षा की दृष्टि से नाममात्र के शिक्षित होने पर भी सार्वजनिक क्षेत्र में नये-नये चमत्कार दिखा सके हैं। अपनी शिक्षा-संस्था में उन्होंने जहाँ पढ़ाई की व्यवस्था की है, वहाँ शिल्प और उद्योग की शिक्षा की तरफ भी पूरा ध्यान दिया है। सन् १९४४ से ही विद्यापीठ में सिलाई, रंगाई, बढ़ईगीरी, लुहार का काम और कताई-बुनाई की शिक्षा दी जाने लगी है। इन क्लासों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्कूल के बाहर के लड़कों को भी शिक्षा दी जाती है और जो विद्यार्थी गरीब होते हैं, उनको छात्रवृत्तियाँ देने की व्यवस्था भी की गई है। संस्था के कोश और बाहर के दानियों—दोनों से ऐसे विद्यार्थियों की पूरी सहायता की जाती है। भारत सरकार का पुनर्वास-विभाग भी कुछ छात्रवृत्तियाँ यहाँ पढ़ने वाले शरणार्थी छात्रों को देता है।

आरंभिक चार वर्षों में ही इस संस्था में ५६८ विद्यार्थियों ने बढ़ाईगीरी, ३७६ ने बुनाई, ६६७ ने सिलाई, १५६ ने लुहारगीरी, ५६ ने वैद्यक और २०७ ने अन्य दस्तकारियों की शिक्षा प्राप्त की। बाहर के जिन विद्यार्थियों ने इसमें प्रशिक्षण प्राप्त किया, उनकी संख्या अलग है। अंगहीन (लूले-लंगड़े) व्यक्तियों को विशेष सहायता देकर स्वावलंबी बनाया गया, जिससे वे अपने निर्वाह लायक कोई काम कर सकें। इनके अतिरिक्त कितने ही विद्यार्थियों को टाइप राइटिंग, शार्टहैंड, फोटोग्राफी की शिक्षा भी दी गई। अब इन उद्योग विभागों को स्थापित हुए लगभग ७४ वर्ष हो चुके हैं। इस बीच में इनकी काफी वृद्धि हुई है और कम से कम तीस-चालीस हजार व्यक्ति इसमें सीखकर तरह-तरह के व्यवसायों में संलग्न हैं।

कृषि-महाविद्यालय की स्थापना—

जिस प्रदेश में यह संस्था कार्य कर रही है, वहाँ छोटे गाँवों और खेतीबारी की ही अधिकता है। बड़ा शहर तो काफी दूरी पर बीकानेर को छोड़कर कोई भी नहीं है। इसलिए इसके संचालकों के सामने प्रायः यह विचार आया करता कि हाईस्कूल और हायर सेकंडरी स्कूल तो अब जगह-जगह खुलने लग गये हैं, पर इस प्रदेश की मुख्य जीविका कृषि का आधुनिक ज्ञान कराने वाला कोई विद्यालय नहीं है। इसलिए वे लोग इसे एक 'कृषि महाविद्यालय' के रूप में परिवर्तित करने की योजना बना रहे थे। इस संस्था के पास इस समय काफी इमारतें, छात्रावास, बहुत अच्छा पुस्तकालय और संग्रहालय आदि सब साधन मौजूद हैं। दो-तीन हजार बीघा जमीन भी इसे मिल चुकी है। भाखड़ा की नहर इसके पास होकर निकली है। इसलिए इसको 'कृषि महाविद्यालय' का रूप देना भी कुछ भी कठिन नहीं है। जब ग्रामीण युवक इसमें से कृषि विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके निकलेंगे, तो वे अपनी भूमि और कृषि की उन्नति करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसं प्रदेश के जन-जीवन की काया पलट कर सकेंगे। इसमें संदेह नहीं।

छोटे गाँवों में शिक्षा प्रसार—

यद्यपि संगरिया विद्यापीठ एक मामूली कस्बे में स्थापित किया गया है और उसके आस-पास ग्रामीण क्षेत्र के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है, तो भी यहाँ के गाँवों में अधिक संख्या अब भी ऐसे गरीब लोगों की है, जो अपने लड़कों को दस-पाँच मील के फासले पर पढ़ने के लिए भेजने का भी खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकते। इसलिए जब स्वामी जी प्रचारार्थ इस 'बागड़' इलाके के दूरवर्ती गाँवों में जाते थे, तो गरीब लोग उनसे प्रार्थना करते थे—"स्वामी जी ! संगरिया जाकर तो धनी लोगों के लड़के ही पढ़ सकते हैं, कुछ हम गरीब लड़कों के बालकों की शिक्षा के लिए भी प्रयत्न करो।" स्वामी जी स्वयं ऐसे ही एक छोटे गाँव के रहने वाले थे और बचपन में उनको ऐसी ही निर्धन परिस्थितियों में पलना पड़ा था। इसलिए वे इन लोगों की वास्तविक दशा को खूब अनुभव करते थे। इन लोगों के हार्दिक उद्‌गारों से उनका हृदय पसीज उठा। उन्होंने इस विषय पर विचार किया और 'मरुभूमि में सेवाकार्य' नामक एक छोटी-सी पुस्तक लिखकर प्रकाशित की, जिसमें इन गरीबों की असहाय अवस्था का हृदयद्रावक वर्णन किया गया था और उनकी सहायता के लिए कुछ सुझाव भी दिए गए थे।

सन् १९४४ में विद्यापीठ के वार्षिकोत्सव पर इन गाँवों में शिक्षा-प्रचार के लिए स्वामी जी ने एक 'त्रैवार्षिक शिक्षा-योजना' प्रस्तुत की , जो लोगों को पसंद आई और उसी समय चंदा इकट्ठा करने का कार्यारंभ हो गया। इसके पश्चात् वे कलकत्ता गये, वहाँ कुछ मारवाड़ी व्यवसायियों से मिलकर नमूने के तौर पर दस ग्रामीण पाठशालाएँ खोलने का निश्चय कर लिया। इनका व्यय 'सूरजमल नागरमल ट्रस्ट' ने देने का निश्चय किया। इन दस पाठशालाओं ने जो काम करके दिखाया, उससे सब लोग बहुत उत्साहित हुए और आगे सौ पाठशालाएँ खोलने की योजना बनाई गई। इस कार्यक्रम की पूर्ति के लिए स्वामी जी कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं को लेकर फिर कलकत्ता जा पहुँचे और प्रवासी मारवाड़ियों की एक सभा बुलाई गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसमें इस अवसर पर ५५ पाठशालाओं के खोले जाने का निश्चय हो गया और प्रत्येक पाठशाला के लिए डेढ़ हजार रुपए का वार्षिक बजट मंजूर कर लिया गया।

अब इन पाठशालाओं की संख्या सौ से ऊपर पहुँच चुकी है। इनमें से अधिकांश की व्यवस्था राजस्थान सरकार के शिक्षा-विभाग ने नियमानुसार ग्रहण कर ली है। जो शेष बची है और जो नई खोली जा रही हैं, उनकी व्यवस्था 'ग्रामोत्थान विद्यापीठ' स्वयं कर रही है। अब ग्रामीण जनता भी शिक्षा के महत्त्व को अनुभव करने लग गई है और इस कार्य में उससे काफी सहयोग मिल जाता है।

प्रेरणा के स्रोत केशवानंद जी—

सफल सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के दो मुख्य गुण होते हैं—कर्मठता और ईमानदारी। स्वामी केशवानंद जी का जीवन आरंभ से ही कठिनाइयों और अभावों का रहा, जिससे उनको परिश्रम और सहिष्णुता का पर्याप्त अभ्यास हो गया। इस श्रेणी के अभावग्रस्त लोगों का, लाभजनक अवसर प्राप्त होने पर ईमानदारी पर पूरी तरह कायम रहना कठिन तो होता है, पर स्वामी जी को इसमें भी अधिक परेशानी नहीं हुई। उन्होंने जो साधु-संन्यासी का बाना ग्रहण किया था, वह दिखावटी नहीं था। यद्यपि हम पुराने ढंग के परोपजीवी साधुओं को पसंद नहीं करते और आजकल के सभी बुद्धिवादी लोगों का ऐसा ही मत है, पर सार्वजनिक सेवा की दृष्टि से देखा जाए तो एक सच्चा साधु निस्संदेह इस क्षेत्र में अद्‌भुत कार्य कर सकता है। जिसको अपना कोई स्वार्थ न हो और जो दो रोटी के सिवाय किसी प्रकार के धन-वैभव की अभिलाषा न रखता हो, जिसको अपने बड़प्पन अथवा बहुत अधिक सम्मान की भी कुछ परवाह न हो, ऐसा व्यक्ति ही कोई ठोस काम कर सकने में सफल हो सकता है। स्वामी जी में ये सब गुण थे, इसी से सैकड़ों लोगों को उनसे प्रेरणा मिली और वे भी सार्वजनिक हित के कार्यों, विशेषतया शिक्षा प्रचार और ज्ञान के प्रसार में सहयोग देने को अग्रसर हुए। स्वामी जी की प्रेरणा और सहयोग से आस-पास के स्थानों में जो पुस्तकालय, छात्रावास, स्कूल आदि स्थापित किए गए उनका विवरण भी सेवा मार्ग पर चलने वालों के लिए उपदेशप्रद है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(१) युवक-समिति, सिरसा—इस संस्था की स्थापना स्वामी जी द्वारा स्थापित अबोहर के साहित्य-सदन से प्रेरणा लेकर की गई। आरंभ में इसमें सात सदस्य और १२५ पुस्तकें थीं। बीच-बीच में स्वामी जी कुछ पुस्तकें देकर इसे अग्रसर करने की प्रेरणा करते रहे। इसने राष्ट्र-भाषा के प्रचार के लिए कई बार 'हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी' का आयोजन किया। अपने वार्षिकोत्सवों पर अनेक महापुरुषों को निमंत्रित किया और वैसे भी किसी अवसर पर नगर में आने वाले नेताओं को बुलाकर पुस्तकालय का निरीक्षण कराया। इस प्रकार माननीय मालवीय जी, सरदार पटेल, श्रीमती सरोजिनी नायडू जैसे महान् नेताओं का पदार्पण भी इसमें हो सका। सन् १६३० के आसपास इसमें पुस्तकों की संख्या ५ हजार से ऊपर थी और सदस्य संख्या ३०० से अधिक पहुँच गई थी। अब तक पुस्तकों और सदस्यों की संख्या में कई गुनी वृद्धि हो गई है।

(२) हिंदी साहित्य-सदन, मंडी डबवाली—यह स्थान संगरिया के समीप ही है। यहाँ स्वामी जी की प्रेरणा से सन् १६३२ में एक छोटा-सा पुस्तकालय स्थापित किया गया। मंडी के कुछ उत्साही व्यक्तियों ने दूसरे ही वर्ष इसके लिए एक बड़ा कमरा बनवा दिया, जिससे इसकी प्रगति संतोषजनक रूप से होने लग गई। सन् १६३२ तक यहाँ तीन कमरे बन गए थे और पुस्तकें भी तीन हजार के लगभग हो गईं थी, जिनसे स्थानीय जनता में साहित्य का प्रचार होता रहता है।

(३) ग्राम छात्रावास, भादरा—इस कस्बे में एक मिडिल स्कूल था, पर छात्रावास के अभाव से दूर के गाँवों के लड़के उससे लाभ नहीं उठा सकते थे। यह बात एक स्थानीय सज्जन चौधरी बीरबलराम जी को खटकी। उन्होंने कुछ सज्जनों से सहायता लेकर कुछ कमरे बनवाए और उनमें छात्रावास कायम कर दिया। इसमें गरीब छात्रों को हर तरह से सहायता भी दी जाती थी, पर इस रेगिस्तानी इलाके में प्रायः अकाल पड़ते रहते थे, जिससे संस्था की हालत डाँवाडोल हो जाती थी। ऐसे अवसरों पर स्वामी केशवानंद जी अन्य स्थानों से सहायता प्राप्त करके इसको स्थिर रखने में पूरा सहयोग देते रहे। परिणाम यह हुआ कि संस्था की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निरंतर प्रगति होती रही और इस समय लगभग हजारों छात्र इसमें रहकर विद्याध्ययन कर रहे हैं।

(४) विद्यार्थी भवन, रतनगढ़—बीकानेर में रतनगढ़ एक प्रसिद्ध कस्बा है। अब से अस्सी-नब्बे वर्ष पहले वहाँ के गाँवों में एक भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ता था और जब कभी किसी ग्रामीण के यहाँ कोई चिट्ठी भी आ जाती, तो उसे पढ़वाने के लिए कई मील चलकर किसी कस्बे में जाना पड़ता था। यह दशा देख श्री रूपराम नामक सज्जन के हृदय में शिक्षा-प्रचार की लगन उठी और उन्होंने नौकरी छोड़कर रतनगढ़ में एक शिक्षा-संस्था स्थापित करने का प्रयत्न आरंभ किया, जिसमें आश्रय पाकर ग्रामीण विद्यार्थी स्थानीय स्कूलों में पढ़ सकें। इस प्रकार इस संस्था की नींव तो पड़ गई, पर काम अच्छी तरह जम नहीं सका। तब संचालकों ने स्वामी केशवानंद जी से सहयोग की प्रार्थना की और उनके उद्योग से शीघ्र ही हजारों रुपया कार्य को सुचारु रूप से संचालन करने के लिए मिल गया। कुछ समय पश्चात् स्वामी जी ने ही इस विद्यार्थी-भवन के लिए एक स्वतंत्र इमारत का शिलान्यास किया। अब इसमें छात्रावास के अतिरिक्त एक पुस्तकालय, शिक्षक-आश्रम, व्यायामशाला और पशुगृह की इमारतें भी बन गई हैं, जिनके निर्माण में विद्यार्थियों ने भी श्रमदान किया है। इस संस्था के उदाहरण को देखकर और भी संस्थाएँ काम करने लगी हैं और अब वहाँ के गाँवों को सर्वथा अशिक्षित नहीं कहा जा सकता है।

(५) विद्यार्थी-आश्रम, राजगढ़—इसकी स्थापना स्वामी जी की प्रेरणा से चौधरी जीवनराम आर्योपदेशक ने की थी। फिर स्वामी जी ने इसके संचालन के लिए एक और सज्जन श्री अमीचंद जी को तैयार किया, जिन्होंने आगे चलकर इसके लिए अपना जीवन ही अर्पण कर दिया। स्वामी जी बराबर सहयोग देते रहे। जब इसके लिए इमारत बनाने की योजना तैयार हो गई , तो राज्य कर्मचारियों ने उसके लिए जमीन दिये जाने में कई प्रकार की बाधाएँ पैदा कर दीं। इससे छात्रावास के बंद होने की स्थिति जान पड़ने लगी। तब अमीचंद जी ने बिना सरकारी मंजूरी के ही 'विद्यार्थी भवन' का मकान बनवा दिया। सरकारी अधिकारियों ने उस पर मुकदमा चला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया, जिसमें उनको तीन वर्ष तक परेशान होना पड़ा, पर छात्रावास चल निकला। अब उसमें कई नये कमरे और जलाशय आदि बन गए हैं और इसका कार्यक्षेत्र बराबर बढ़ रहा है।

(६) किसान-छात्रावास, बीकानेर—बीकानेर एक बड़ा शहर है, जहाँ अनेक शिक्षा-संस्थाएँ काम कर रही हैं। पर ठहरने की समस्या के कारण गाँवों के गरीब लड़के उनका लाभ बहुत कम उठा सकते थे।

(७) शिक्षा-सदन खींची वाला—स्वामी केशवानंद के एक सहकारी श्री नित्यानंद जी को किसी गाँव में रहकर शिक्षा प्रचार करने का उत्साह उत्पन्न हुआ और वे उपयुक्त स्थान तलाश करने के लिए निकल पड़े। खींची वाला का वातावरण उनको आकर्षक लगा और वे एक खेत में थोड़ी-सी जमीन साफ करके बैठ गये। गाँव में जाकर रोटी माँग लेते और पानी का एक घड़ा पास के किसी खेत वाले से माँग लिया। इसी प्रकार आठ-नौ दिन बीत गए, पर कोई विद्यार्थी नहीं आया। ये अपने प्रयत्न में लगे रहे और खेती का काम कम होने पर कुछ बालक आने लगे। इन सबने स्वयं ही सरकंडे काटकर और रस्सियाँ बटकर एक इतना बड़ा छप्पर तैयार कर लिया, जिसमें बैठकर साठ-सत्तर विद्यार्थी पढ़ सकें। इसके पश्चात् नित्यानंद जी स्वामी केशवानंद जी की प्रेरणा से आस-पास के गाँवों का सहयोग प्राप्त करके इस कार्य को बढ़ाते रहे। इस संस्था में एक छात्रावास खोला गया है, जिसके विद्यार्थी थोड़ी-सी जमीन में खेती करके अपने खर्च लायक अनाज और साग-तरकारी पैदा कर लेते हैं और उनसे ही अपना निर्वाह अच्छी तरह कर लेते हैं। उन्होंने गौ-पालन का कार्य भी आरंभ कर दिया है, जिससे उनकी घी, दूध, दही आदि की आवश्यकता पूरी हो जाती है।

इस प्रकार स्वामी केशवानंद जी उस पिछड़े हुए प्रदेश के लिए प्रेरणा के एक अक्षय स्रोत बन गए हैं और अब ऐसी स्थिति आ गई है कि उनके प्रोत्साहन और थोड़ी सहायता से नई-नई संस्थाएँ खुलती जाती हैं, जिनकी संख्या सैकड़ों तक पहुँच गई है। ऐसी दशा में यदि वहाँ के निवासी उनको देवता की तरह मानें तो इसमें क्या आश्चर्य है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सादगी और मितव्ययिता—

ये दोनों गुण स्वामी जी में स्वाभाविक हैं और उनकी सफलताओं का बहुत कुछ श्रेय इनको ही है। जब लोग उनको सार्वजनिक सेवा कार्यों में इतना अधिक परिश्रम और त्याग करते देखते हैं, तो वे बिना कहे ही उनसे प्रभावित हो जाते हैं और तन, मन, धन से जैसा जिसके लिए संभव होता है, सहायता करने को तैयार हो जाते हैं। इतनी बड़ी संस्थाओं का कार्य करते हुए और उनमें लाखों रुपया खर्च करते हुए भी स्वामी जी स्वयं अपना खर्च कैसी मितव्ययिता से चलाते हैं, यह उन अधिकांश कार्यकर्ताओं के लिए दृष्टांत स्वरूप है, जो सार्वजनिक धन को खर्च करते समय लापरवाही से काम लेते हैं और समझते हैं कि इसमें क्या नुकसान होता है ? स्वामी जी की किफायतशारी कभी तो इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उसे लोग एक त्रुटि समझने लगते हैं। इसका नमूना एक सहकारी ने इस प्रकार दिया है—

"एक बार उनकी बीमारी के बाद मैं उनके दर्शनार्थ संगरिया गया हुआ था, तो क्या देखता हूँ कि उनके कमरे के एक कोने में कुछ कच्चे-पक्के बेर रखे हैं। मैंने पूछा—'स्वामी जी आप बेरों का क्या करते हैं ?' उत्तर मिला—"थोड़ा सा खा लेता हूँ, यह इस इलाके का मौसमी फल है, और कोई दूसरा फल आजकल है भी नहीं, और फिर रोज किससे लाने को कहा जाए ?" स्वामी जी का उत्तर सुनकर हैरानी हुई कि पेट की बीमारी का अस्पताल में इलाज करवाने के बाद वे कितनी लापरवाही कर रहे हैं। अपने स्वास्थ्य के संबंध में और वह भी बीमारी की हालत में ऐसा संकोच किस काम का ? जब मैं वहाँ से लौटकर अबोहर आया और एक मित्र से इस घटना का जिक्र किया, तो उन्होंने सौ रुपये देकर कहा कि इसे पथ्य और फल आदि के लिए स्वामी जी को भेंट कर आओ। जब मैंने वह रुपया देकर अपने मित्र का संदेश सुनाया, तो वे कहने लगे—"इसकी क्या आवश्यकता थी, मुझे तो जल्दी ही बाहर जाना है, वहाँ फल कहाँ मिलेंगे ?" मैं तो चला आया—पर जहाँ तक मैं जानता हूँ, उस रुपये का उपयोग उन्होंने अपने स्वास्थ्य के बजाय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी दीन-हीन छात्र या कष्ट-पीड़ित व्यक्ति की सहायतार्थ कर दिया होगा।

"अभी हाल की बात है, वे राज्यसभा के सदस्य के रूप में दिल्ली में ही थे, एक दिन मैंने देखा कि हाथ पर दो-तीन रूखी रोटियाँ रखे हुए दाल से खा रहे हैं। दाल में खूब मिर्च पड़ी थी और रोटियाँ ठंडी होने के कारण सूख गई थीं और वे जल्दी-जल्दी उनको गले के नीचे उतार रहे थे। जब मैंने इसका कारण पूछा तो कहने लगे—"मुझे कई जगह जाना है और शाम को गाड़ी पकड़नी है। यहीं तंदूर वाले से इस लड़के के हाथ दो रोटी मँगवा ली हैं।" इस पर मैंने कहा—"इस आयु में आपको इस तरह भोजन नहीं करना चाहिए, और कुछ नहीं तो कम से कम कुछ मक्खन, दही, फल तो भोजन के साथ लिए जा सकते थे।" वे बोले—"घी तो यहाँ इन लड़कों का है ? और तंदूर वाले के पास जब मैं जाता हूँ, तो वह रोटी चुपड़ देते हैं, पर मुझसे उसके पैसे नहीं लेते।" मैंने कहा कि ऐसे अवसर पर आप चतुर्वेदी जी (श्री बनारसीदास जी) के यहाँ भोजन कर लिया करें। वे इनके लिए कई बार कह भी चुके हैं। उन्होंने उत्तर दिया—"यह तो ठीक है, पर मुझे कई जगह आना-जाना होता है और वहाँ पर आने-जाने में समय ज्यादा खर्च हो जाता है।"

स्वामी केशवानंद ने संगरिया और आस-पास के इलाके में विद्यापीठ और बहुसंख्यक शिक्षा-संस्था स्थापित करके उसकी कायापलट कर देने का जो चमत्कार दिखाया है, उसका वर्णन करते हुए भी उसी प्रदेश के एक निवासी चौधरी शिवदत्तसिंह ने स्वानुभव के रूप में लिखा है—

"उस दिन (२६-२-१६२७) को मध्याह्नकाल के समय सब विद्यार्थी संगरिया के स्कूल के कच्चे बरामदे में बैठकर बालसभा का आयोजन कर रहे थे। मैं तथा प्रधानाध्यापक श्री ज्ञानीराम जी भी एक बालसभा की कार्यवाही में लगे हुए थे। उसी समय एकाएक एक अनजान साधु महोदय का सभा-स्थल में आगमन हुआ, वे चुपचाप बालसभा की प्रत्येक कार्यवाही को देखते रहे। उस समय इस 'विभूति' की सूरत से त्याग, सादगी, उच्च-विचार तथा विद्या-प्रेम की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक अनूठी आभा झलक रही थी। मैंने आपसे निवेदन किया कि बालकों को कुछ उपदेश दीजिए। स्वामी जी ने प्रार्थना स्वीकार करके विद्याध्ययन पर ऐसा उपदेश दिया कि जिससे समस्त विद्यार्थी और प्रधानाध्यापक महोदय बहुत ही प्रभावित हुए। इस पर हम सबने आपसे यहीं विराजने का आग्रह किया। आपने इसे भी स्वीकार किया और तब से विद्यालय की उन्नति के लिए अथक परिश्रम करते रहे हैं। उसके फलस्वरूप यह संस्था उन्नति की ओर निरंतर अग्रसर होती जा रही है और उन साधु महोदय (केशवानंद) को जो एक दिन संगरिया वालों के लिए अजनबी थे, आज इस प्रांत का बच्चा-बच्चा जानता है।"

"स्वामी जी का ध्यान पहले विद्यालय भवन की तरफ गया और इस कार्य के लिए वे दिन-रात बाहर भ्रमण करने लगे। सचमुच स्वामी जी में कर्म करने की एक अद्‌भुत शक्ति है, जिसके द्वारा उन्होंने थोड़े ही समय में अच्छी मात्रा में अर्थ संग्रह करके, उन कच्चे कोठों की जगह एक विशाल, सुरम्य पक्का विद्यालय-भवन बना दिया। नीम के वे दस-बारह वृक्ष, जिन्हें कभी हम लोगों ने बड़े परिश्रम से लगाया था और जिनके पास पहले रेतीले मैदान के सिवाय और कुछ न था, आज एक सुंदर वाटिका के रूप में अपनी बगल में कई जलकुंड लिए लहरा रहे हैं। इनके पास खड़े अन्य पचासों वृक्ष समूह भी स्वामी जी का यशोगान करते दिखलाई दे रहे हैं। "

"यह संगरिया वही स्थान है, जहाँ पर अ, आ, इ, ई की पोथी का मिलना भी दुर्लभ था, परंतु आज स्वामी जी के त्याग ने सर्व साधारण के लिए महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का उपलब्ध होना भी सहज बना डाला है। स्वामी जी ने विद्यालय में एक ऐसे पुस्तकालय को जन्म दिया है, जिसमें अनेक भाषाओं, विचारों तथा धर्मों की पुस्तकें संग्रहीत हैं।"

"पहले हमारे समय में इस स्थान पर छुआछूत का महाभयंकर रोग पाया जाता था। उसका यहाँ होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि यह प्रांत विद्या के नाते सदा पिछड़ा ही रहा है और इसी अविद्या के कारण छुआछूत की महामारी का बोलबाला था। एक बार तो अछूतों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को पढाने के कारण मंडी वाले हमारे ऐसे विरोधी बन गए कि उन्होंने हमको पीने के लिए पानी देने से इनकार कर दिया था। पर स्वामी जी के पधारने से यह छुआछूत रफूचक्कर हो गई और आपने संगरिया विद्यालय का द्वार प्रत्येक वर्ग और जाति के लिए खोल दिया। श्री धर्मपाल हरिजन इसी विद्यालय के एक विद्यार्थी थे, जिन्होंने बड़ी कठिनाइयों का सामना करके विद्या ग्रहण की और वे हरियाणा प्रांत में एम० एल० ए० के पद पर सुशोभित रहे।

"एक समय की बात है कि स्वामी जी विद्यापीठ के लिए ५० हजार का चंदा करने को बाहर निकले। मेरे एक मित्र ने हँसी में मुझसे कह दिया कि यदि वे मेरे पास आएँ, तो एक पैसा भी नहीं दूँगा। पर जब स्वामी जी वहाँ पहुँचे तो झट से ३००) रु० चंदा दे दिया। मैंने मिलने पर उनसे कहा—आप तो कहते थे कि एक पैसा भी न दूँगा, अब ३००) रु० कैसे निकाल दिया ? तब मित्र ने कहा—"क्या करूँ, वास्तव में स्वामी जी का व्यक्तित्व अनोखा ही है। ऐसे त्यागी पुरुष को मैं खाली हाथ कैसे लौटा सकता था ?"

स्वामी जी अपने संस्था को अपने शरीर से ज्यादा चाहते हैं। कई बार आपको पहाड़ी प्रदेश में स्वास्थ्य-सुधार के लिए भेजा गया था और चलते समय आपके शिष्यों ने खर्च के लिए ५००) रु० भेंट किए। स्वामी जी ने इस रकम को भी अपने लिए खर्च नहीं किया और वहाँ पर अपना काम बड़ी तंगी से चलाकर उस रुपए से विद्यापीठ के संग्रहालय (म्यूजियम) के लिए कई अनूठी वस्तुएँ खरीद लाए। जब शिष्यों ने आपसे इस संबंध में कहा तो यही उत्तर मिला—भाई ! मेरे पास अपने लिए जो वस्तु है, वह भी मैं इसी संस्था के निमित्त समझता हूँ।

यद्यपि स्वामी जी ऐसी ही सादगी और कम खर्च का जीवन बिताकर गरीब गाँव वालों के साथ रहकर उनकी सेवा कर सके। पर आयु के तकाजे का ध्यान रखना भी उचित था। स्वामी जी ने कई सहस्र विद्यार्थी और लाखों ग्राम निवासियों के हित का भार उठा रखा था, इसलिए इस अस्सी वर्ष की आयु में उनको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना ही चाहिए था। उनके सभी साथी और उनकी योजनाओं से लाभ उठाने वाले छात्रवृंद सदैव यही मानते रहते हैं कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी जी अभी अनेक वर्षों तक जीवित रहकर लोक-सेवा के सर्वोत्तम धर्म का पालन करते रहें।

स्वामी केशवानंद के चरित्र की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने जो कुछ किया है, वह बहुत ही थोड़े साधनों और विपरीत परिस्थितियों में रहकर किया है। इसलिए उनके हर एक कार्य साधारण स्थिति के व्यक्ति के लिए भी अनुकरणीय और उदाहरण-स्वरूप हो सकते हैं। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि जो कोई व्यक्ति लगनपूर्वक किसी सेवा-कार्य में लग जाए तो वह बहुत बड़े कार्यों को पूरा करके दिखा सकता है। स्वामी जी की इन्हीं विशेषताओं को देखकर राष्ट्रभाषा के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री संतराम जी (बी० ए०) ने उनका परिचय देते हुए लिखा है—

"यदि परोपकारमय जीवन का नाम साधुता है, तो स्वामी केशवानंद जी सच्चे साधु हैं। यदि कर्मण्यता का नाम साधुता है, तो स्वामी केशवानंद जी सच्चे साधु हैं। यदि शिक्षा द्वारा अविद्या-अंधकार को दूर करने का नाम साधुता है, तो स्वामी केशवानंद जी सच्चे साधु हैं। यदि तप और त्याग का नाम साधुता है, तो स्वामी केशवानंद जी सच्चे साधु हैं। हजारों-लाखों गेरुआ कपड़े पहने 'ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या ?' का उपदेश देते हुए आलस्य और अकर्मण्यता में बिताने वाले 'भुवि भारभूत' साधु नामधारी लोगों के लिए स्वामी केशवानंद जी जैसे सच्चे साधु ज्योति-स्तंभ के समान हैं। ऐसी विभूतियों के वास्तविक महत्त्व का ठीक-ठीक मूल्यांकन समकालीन लोग प्रायः नहीं कर पाते। आने वाली पीढ़ियाँ ही उनकी गौरव-गरिमा का वास्तविक अनुमान कर सकेंगी।"

❐ ❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org